THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

निष्पक्ष राजनीतिक विचारधारा की तरफ बढ़ना
Growing nonpolitical

Author – Margaret Rogers

Christian Science Journal Volume 132, Issue 01, January 2014

ऑन लाइन क्रिश्चियन साँयस मानीटर को पढ़ते हुए मुझे चालक रहित विमान के असैनिक प्रयोग पर एक सर्वेक्षण करने का निमन्त्रण मिला। मेरे विचारों के बारे में कुछ प्रश्नों के बाद सर्वेक्षण समाप्त हो गया, मुझे पूछते हुए कि मैं अपना 'बहुत उदार' से 'बहुत रूढ़िवादी' के मापदंड पर मूल्यांकन कँरू। उस सूची पर आखिरी विकल्प–'निष्पक्ष राजनीतिक विचारधारा' ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया।

जिस महीने मेरी बेकर एडी ने मानीटर प्रारम्भ किया था, बास्टन के एक समाचारपत्र ने उन्हें पूछा था, कि उनकी राजनीति क्या थी? उन्होंने उत्तर दिया था, ''वास्तव में कोई नहीं, सिवाए उचित सरकार को समर्थन देने में सहायता करने के, **परमेश्वर** को सबसे अधिक प्रेम करने के और अपने पड़ौसी को अपने समान प्रेम करने के'' (दि फर्स्ट चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट, एंड मिसलेनी, पृष्ठ 276)

यह निष्पक्ष राजनीतिक विचारधारा की परिभाषा है, जिसका मैं दावा करना पसँद करूँगी। धरती पर शाँति और इंसानो के प्रति सद्भावना के इससे बेहतर तरीके के बारे में सोचना कठिन है (देखो लूका 2:14)। और मैं आभारी हूँ कि प्रतिदिन मानीटर को पढ़ना मुझे (और मुझे लगता है और कई लोगों को) और अधिक आध्यात्मिक उत्साह–एक परिस्थिति में निहित नैतिक मुद्दों को समझने के लिए समाचार को पढ़ने की तथा उपचार के लिए निःस्वार्थ प्रार्थना करने की एक इच्छा–की तरफ बढ़ने में सहायता करता है।

पिछले साल मानीटर ने एक मुद्दे का विवरण दिया, जिसका मैं काफी देर से पक्ष ले रही थी। इसके संतुलित दृष्टिकोण ने मुझे शिक्षित किया कि दूसरों की विपरीत दिशा में उतनी ही दृढ़ धारणा क्यों थी। जीवन के मुझसे बहुत अलग अनुभवों के साथ सामान्य व्यक्तियों के साक्षात्कारों ने मुझे बताया कि वे अच्छे लोग थे, विशेष तरह की असुरक्षा के साथ जूझते हुए। इसने मुझे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया तथा यह जानने के लिए कि **परमेश्वर** का प्रेम असुरक्षा को समाप्त कर देता है–बजाए केवल उनके पक्ष की निंदा करने के।

जब मानीटर शुरू हुआ उसके दो साल बाद, मिसेज़ एडी ने टिप्पणी की, ''मैं संसार के साथ वार्तालाप करते हुए अपने कमरे में अकेली, शाँत बैठती हूँ . . . इसांन में अच्छाई मुझे दिलासा देती है. . . '' '' दूसरी तरफ बुरा करने वाले का, ''कोई सम्प्रदाय, कोई मन, कोई बल नहीं होता . . . ।'' फिर उन्होंने

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

पूछाः कौन यकीन करता है जो मैंनें लिखा है? वह जिसे अच्छाई का सबसे अधिक अनुभव है। कौन इस पर यकीन नहीं करता? वह जिसे बुराई का सबसे अधिक भय है। इस मत का समाधान क्या है? यह अनुभव है, नश्वर विद्यमानता का, प्रत्येक पल, घड़ी और दिन हम में से प्रत्येक को अच्छाई की सर्वस्वता में हमारी समझ के अनुपात में, बुराई की निरर्थकता की समझ के और निकट ले आता है'' (AI0335,© मेरी बेकर एडी संग्रह, दि मेरी बेकर एडी, लायब्रेरी)।

लेखन तथा चित्रों के द्वारा क्रिश्चियन साँयस मानीटर पाठकों को सारे संसार के लोगों में अच्छाई को अनुभव करने में सक्षम बनाता है। जितना अधिक हम अच्छाई को सामान्य की तरह समझते है, हमारे पास बुराई, जो कि इतनी शक्तिशाली दिखाई देती है, का सामना करने और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए और अधिक साहस होता है। कुछ लोग जो क्रिश्चियन साँयस से प्रेम करते हैं, कहते हैं कि वे मानीटर नहीं पढ़ते क्यों कि यह या तो बहुत अधिक उदार है या बहुत अधिक रूढ़िवादी। परन्तु मैं ऐसा मानती हूँ कि जैसे ही हम निष्पक्ष राजनीतिक विचारधारा की तरफ बढ़ते हैं जिसकी इच्छा केवल उपचार करना होती है, मानीटर के पाठक को सद्भावना का अनुभव देने की निष्ठा, इसे पढ़ने का एक अति सम्मोहक आकर्षण होगा।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.